धान की सीधी बुआई एवं उत्पादन के लिए ध्यान रखें

उपयुक्त भूमिः
धान की सीधी बुआई बलुई दोमट से लेकर भारी चिकनी मिट्टी में, जहाँ पर धान की रोपाई की जाती है, उन सभी प्रकार की भूमियों में धान की सीधी बुआई भी की जा सकती है।

खेत की तैयारीः
धान की सीधी बुआई करने के लिए खेत का समतल होना आवश्यक है। यदि सम्भव हो तो लेजर लैण्ड लेवलर की सहायता से खेत को समतल करें। सीधी बुआई की अच्छी पैदावार लेने के लिए गेहूँ कटाई के बाद एक जुताई कर पाटा लगा कर खेत को समतल करें। इसके बाद पलेवा कर खेत को हल्की जुताई कर तैयार करें और धान की सीधी बुआई करें।

बुआई का समयः
धान की सीधी बुआई का उपयुक्त समय 20 मई से 30 जून तक होता है। देर से बुआई करने पर थोड़े समय बाद ही भारी बारिष की आषंका होने का खतरा रहता है। भारी वर्षा विषेष रूप से मटियार मिट्टी पर बुआई प्रभावित कर सकती है।

बुआई की विधिः
धान की सीधी बुआई खेत में सूखे या नमी युक्त भूमि में की जा सकती हैं।. सूखी भूमि में धान की बुआई के बाद बीजों के जमाव के लिए हल्की सिंचाई की आवष्यकता होती है। नम भूमि में (Vattar) बुआई के लिए पलेवा (बुआई से पहले की सिंचाई) करने के बाद या वर्षा के बाद बुआई करें।

उन्नत किस्मों का चयन व बीज दरः
रोपित धान में प्रयोग की जाने वाली प्रजातियों तथा संकर प्रजातियों की भी धान की सीधी बुआई कर सकते हैं। उपरिवार (upland) क्षेत्रों में सिंचाई की आवष्यकता को कम करने तथा समय से गेहूँ की बुआई करने के लिए धान की कम अवधि वाली प्रजातियों को प्राथमिकता देनी चाहिए। जबकि जल भराव (lowland) वाले क्षेत्र में जहां जल निकासी का उचित प्रबंध नहीं है वहाँ लम्बी अवधि वाली प्रजाति लगा सकते है। जीरो टिलेज मशीन से धान की सीधी बुआई करने के लिए सामान्य प्रजातियों की बीज की मात्रा 25–30 किलोग्राम/हे0 तथा संकर धान 15–18 किग्रा/हे0 प्रयोग करें। धान की बुआई के समय गहराई का विशेष ध्यान रखें तथा गहराई 2–3 सेमी0 से अधिक नहीं होनी चाहिए।

धान की किस्मों का चयन
लंबी अवधि वाले धान– (15 मई से 30 मई तक बुआई के लिए)
बीपीटी 5204 (सांभा महसूरी), एमटीयू 7029 (नाटा महसूरी), राजेन्द्र महसूरी–1, मोती, स्वर्णा सब–1[क] (बाढ़ प्रभावित के लिए) राजश्री

मध्यम अवधि वाले धान– (1 जून से 15 जून तक बुआई के लिए)
एराइज 6444, पीएचबी–71, एराइज प्राइमा, एराइज धानी, डी.आर.एच. 748, आर.एच. 1531, पी.ए.सी. 835, पी.ए.सी. 837, राजेन्द्र स्वेता, राजेन्द्र सुभाषिनी, एमटीयू 1001, एनडीआर–359, यू.एस. 312, एराइज 6444 गोल्ड, 27 पी. 31 आदि।

छोटी अवधि वाले धान–(15 जून से 25 जून तक बुआई के लिए)
सरयू–52, राजेन्द्र भगवती, सहभागी, पी.आर.एच.–10, एराइज–6129, एराइज तेज, आर.एच.–257, डी.आर.एच.–2366, डी.आर.एच.–834, पी.ए.सी.–807 सहभागी धान[ख] (सूखा प्रभावित के लिए) आदि।

©CSISA 2015. Attribution – Non Commercial-ShareAlike 4.0 (Unported)

बुआई के बादः

बिस्पाइरीबैक सोडियम (नोमिनी गोल्ड, अडोरा आदि) का 100 मिली / /एकड़ की दर से 150 लीटर पानी में छिड़काव करें। बिस्पाइरीबैक सोडियम (नोमिनी गोल्ड, अडोरा आदि) + पाइराजोसल्फ्यूरॉन का 80मिली + 60–80 ग्राम / /एकड़ की दर से 150 लीटर पानी में छिड़काव करें। बिस्पाइरीबैक सोडियम (नोमिनी गोल्ड, अडोरा आदि)+टॉपस्टार का 80 मिली + 45 ग्राम/एकड की दर से 150 लीटर पानी में छिड़काव करें। खरपतवारनाषियों के सही तरह से छिड़काव के लिए 3 बूम वाले फ्लैट फैन नोजिल का प्रयोग करें।

खरपतवारनाषी की मात्रा एवं छिड़काव का समय नीचे दी गयी **तालिका 1** में देखें

धान की सीधी बुआई में शाकनाशियों का प्रयोग

क्रमांक	शाकनाशी	मात्रा/एकड़	प्रयोग का समय	प्रयोग की विधि
1.	पेंडीमेथालीन 30ई.सी. (स्टॉम्प)	1333 मिली (400ग्रा.सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के तुरन्त बाद	रसायन को 150लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें
2	बिस्पाइरीबैक सोडियम+पाइराजोसल्फ्यूरॉन	80 मिली + 60 ग्रा . (8+.6 ग्रा. सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के 15–20 दिन बाद	रसायन को 150लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें
3	बिस्पाइरीबैक10% एस.पी. (नोमिनी गोल्ड, अडोरा)	80–100 मिली (8–10ग्रा. सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के 15–20 दिन बाद	रसायन को 120–150 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें
4	आग्जाडायरजिल 80 डब्ल्यू.पी. (टॉपस्टार)	50ग्रा. (40 ग्रा. सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के तुरन्त बाद	रसायन को 150लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें
5.	बिस्पाइरीबैक सोडियम+2, 4–डी	80–100 मिली +250 मिली (8–10ग्रा.+200ग्रा. सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के 15–20 दिन बाद	रसायन को 120–150 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें
6.	फिनोक्साप्रोप+सेफनर 6. 7ई.सी. (राइसस्टार)	447 मिली. (30 ग्रा. सक्रिय तत्व/एकड़)	सीधी बुआई के 20 दिन बाद	रसायन को 150 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ क्षेत्र में छिड़काव करें

सिंचाई प्रबन्धनः

पानी की कमी व सिंचाई करने में खर्च बढ़ती जा रही है। इसके लिए बिना पैदावार घटाये पानी बचाने के लिए सिंचाई का सावधानी से प्रबंधन करने की जरूरत होती है। धान के अच्छे विकास और पैदावार के लिए खेत में लगातार पानी के भरे रहने की जरूरत नहीं होती है। धान की खेती कुछ समय के अन्तराल के माध्यम पर सिंचाई यानी मिट्टी की सतह सूखने पर समय–समय पर सिंचाई करके कामयाब हो सकती है। धान की सीधी बुआई में सिंचाई की जरूरत काफी हद तक मौसम और मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करती है। बारिष न होने पर अधिक हल्की (कम चिकनी से अधिक बलुई) मिट्टी के लिए कम दिनों के अन्तर पर सिंचाई की जरूरत होती है। बीज के सही तरह से जमाव के लिए सीधी बुआई वाले धान को बुआई के बाद पहले तीन सप्ताह में पानी की आपूर्ति की जरूरत होती है। जब धान की सीधी बुआई गर्म और षुष्क स्थितियों में की जाती है तो जड़ क्षेत्र में मिट्टी नम रखने के लिए 3–5 दिनों के अन्तराल में 1–2 सिंचाई की जरूरत पड़ती है। सक्रिय कल्ले बनने (active tillering) के चरण के दौरान जो कि बुआई के 30–45 दिन के बाद की अवस्था तथा बाली निकलने से लेकर दाना भरने (grain filling) की अवस्था में मिट्टी का ऊपरी भाग (0–15 सेमी) का संतृप्त के नजदीक (saturated soil) होना अनिवार्य है।

CSISA को नयी प्रजातियों, स्थायी फसल प्रबंधन प्रौद्योगिकियों तथा नीतियों के त्वरित विकास और समावेशी परिनियोजन के माध्यम से दक्षिण एशिया में कृषि उत्पादकता और संसाधन से गरीब खेतिहर परिवारों की आय बढ़ाने के लिए चलाया गया है। इस परियोजना का कार्यान्वयन CIMMYT, IFPRI, ILRI तथा IRRI द्वारा किया जा रहा है।

©CSISA 2015 . Attribution – Non Commercial-ShareAlike 4.0 (Unported)